श्री महा नारायण दिव्य रुद्र सहित शत सहस्र चंडी विश्व शांति महा यागम

(श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट, श्री कांची कामकोटि पीठम, चिन्मयी सेवा ट्रस्ट द्वारा आयोजित)

(18 नवम्बर 2024 से 1 जनवरी 2025)

श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट कारसेवकपुरम

कॉर्पोरेट पता: #1-8-448, लक्ष्मी बिल्डिंग, 5वीं और 6वीं मंजिल, बेगमपेट, हैदराबाद, तेलंगाना

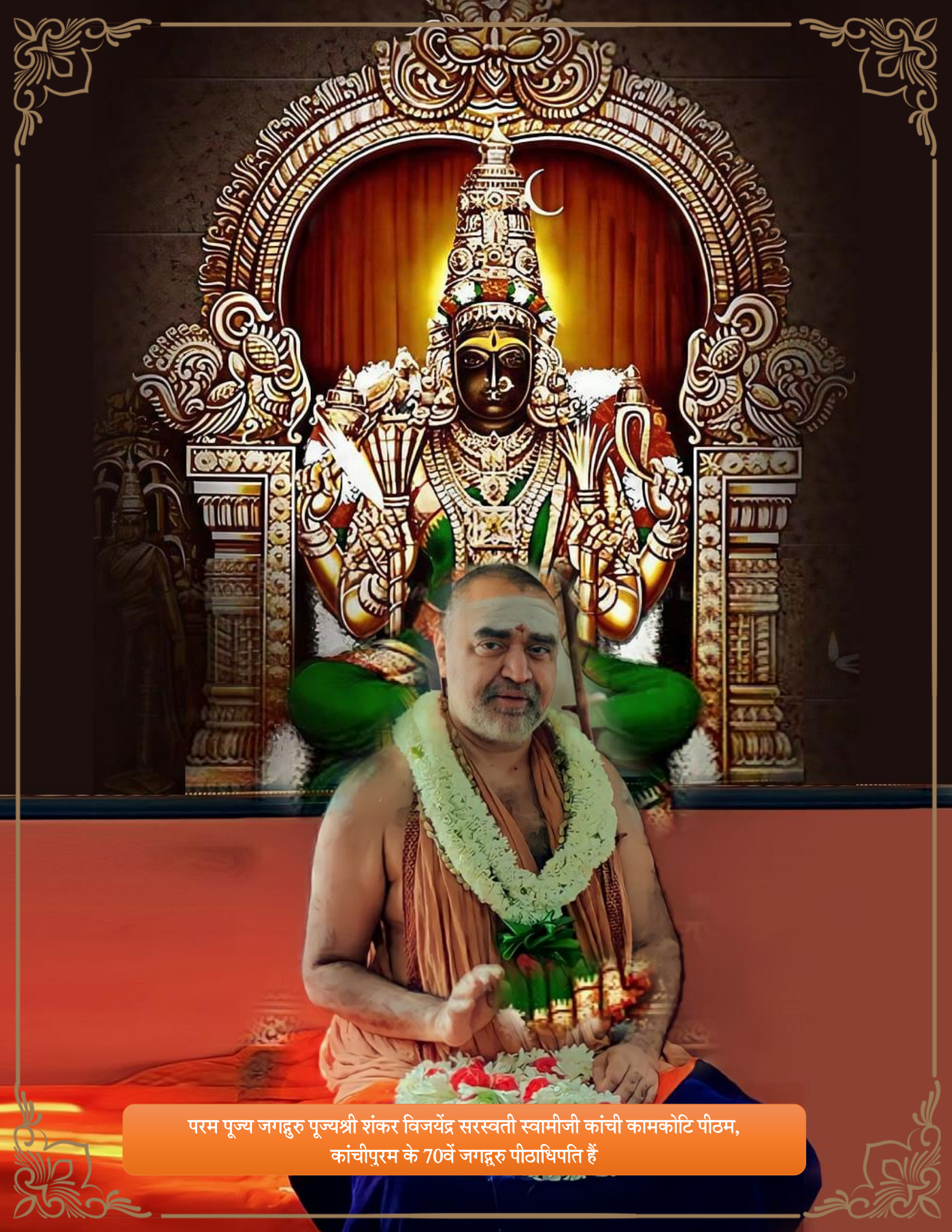

परम पूज्य जगद्गुरु पूज्यश्री शंकर विजयेंद्र सरस्वती स्वामीजी कांची कामकोटि पीठम,
कांचीपुरम के 70वें जगद्गुरु पीठाधिपति हैं

श्री महा नारायण दिव्य रुद्र सहित
शत सहस्र चंडी विश्व शांति महा यागम

18 नवम्बर 2024 से 1 जनवरी 2025 तक

यो देवः सवितास्माकं धियो धर्मादिगोचरः।
प्रेरेयेत्तस्य यद्भार्गः तत्वरेण्यमुपस्महे॥

भगवान मानवता को धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करें। जब लोग धर्म का पालन करेंगे तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को लाभ होगा। अनादि काल से भारत ब्रह्माण्ड का कल्याण करके धर्म का पालन करता आ रहा है (लोकः समस्तः सुखिनो भवन्तु)। जब भी मानवता राक्षसी शक्तियों के बढ़ते प्रभाव के कारण धर्म का पालन करना कठिन बनाकर अपना मार्ग खो देती है, तब भगवान धर्म को पुनर्स्थापित करने और बनाए रखने के लिए अवतार लेते हैं (यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत अभ्यथानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्)।

भारत में सनातन धर्म का पालन किया जाता है और इसीलिए भगवान ने इस पवित्र स्थान पर अवतार लिया। इसीलिये, दुनिया भर के विद्वानों ने भारत को विश्वगुरु का स्थान दिया और पूरे विश्व में सम्मान के योग्य राष्ट्र के रूप में मान्यता दी है।

सृष्टि में, मनुष्य का अच्छी और बुरी शक्तियों से प्रभावित होकर बुरी शक्तियों की ओर अधिक झुकाव होना स्वाभाविक है। जो लोग इस बुराई को भड़काते हैं उन्हें राक्षस कहा जाता है।

त्रेता युग में, भगवान ने राम के रूप में अवतार लिया और अपने राज्य के लोगों के बीच धर्म का पालन किया और राम राज्य की स्थापना की। द्वापर युग में, भगवान ने कृष्ण के रूप में अवतार लिया और धर्म की शिक्षा ओं के माध्यम से अधर्म की शक्तियों को हराया और धर्म को फिर से स्थापित किया था।

इस कलियुग में, जहां धर्म कमजोर है और अपनी उपस्थिति बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहा है, 500 वर्षों के बाद एकीकृत धर्म के प्रतीक श्री राम की अयोध्या में पुनः स्थापना दुनिया में शांति लाएगा।

वर्तमान में धर्म के पतन के कारण आंतरिक और बाह्य आपदाएं, आंतरिक युद्ध और प्राकृतिक आपदाएं के वजह से, कांची कामाक्षी माता ने अपने मंदिर के मुख्य पुजारी **श्री सुरेश शास्त्री जी** के माध्यम से आदेश दिया है कि शांति बहाल करने के लिए श्री अयोध्याधाम **(हिंदुओं के लिए सात सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थानों में से पहला)** में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की जन्मस्थली में रुद्र सहित चंडी यागम किया जाए। शास्त्रों में यह भी पुष्टि की गई है कि कलियुग में विनायक और चंडी की पूजा विशेष रूप से शक्तिशाली है जैसा कि आधिकारिक ग्रंथों कलौ चंडी विनायकौ में उल्लेख किया गया है।"

भगवान राम की उपस्थिति में **श्री महा नारायण दिव्य रुद्र सहित शत सहस्र चंडी विश्व शांति महायागम** करने से विश्व शांति, सार्वभौमिक कल्याण आएगा और लोगों में धर्म की प्रेरणा होगी।

ज्ञान और वैभव के तीन प्राचीन केंद्र अयोध्या, काशी और कांची एक ऐसा बंधन साझा करते हैं जो समय से परे है और **उपनिषदों और पुराणों** में भी इसका उल्लेख किया गया है। **ललितोपाख्यानम** के 39वें और 40वें अध्याय में कांची और अयोध्या के बीच संबंध का उल्लेख किया गया है। इसमें बताया गया है कि कैसे अयोध्या के निःसंतान **राजा दशरथ** को एक स्वप्न आया जिसमें उन्हें देवी कामाक्षी के दर्शन के लिए कांची जाने की सलाह दी गई है। राजा दशरथ ने **देवी कामाक्षी** का आशीर्वाद लेने के लिए **त्रेतायुग** में अयोध्या से कांची तक 2000 किलोमीटर की यात्रा की थी। उन्होंने अयोध्या में **"पुत्र कामेष्टियागम"** किया, जिसके बाद उन्हें भगवान राम सहित चार पुत्रों की प्राप्ति हुवा। **मार्कंडेय पुराण** में **वर्णित देवी** कामाक्षी इक्ष्वाकु वंश की **कुलदेवी** भी हैं।

कांची और अयोध्या के बीच के संबंध का उल्लेख **ब्रह्माण्डपुराण** में भी किया गया है। कांची और अयोध्या का उल्लेख भगवान शिव के **पंचभूत स्थलों** में से एक **पृथ्वीक्षेत्र** के रूप में किया गया है।

कांची और अयोध्या के बीच संबंध का उल्लेख भगवान शिव के 'पंचभूतस्थलम' (प्रकृति के तत्वों को समर्पित मंदिर) में किया गया है, जहां कांची और अयोध्या क्षेत्रों को 'पृथ्वीक्षेत्रम' कहा जाता है। ये दोनों शहर मोक्ष (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति) प्राप्त करने के सात केंद्रों में से हैं जिनमें अयोध्या, मथुरा, माया (मायापुरी या हरिद्वार), काशी (वाराणसी), कांची (कांचीपुरम), अवंतिका (उज्जैन) और द्वारावती (द्वारका) शामिल हैं। यह यागम भगवान राम के जन्म स्थान पर किया जा रहा है, जिन्होंने **"राम राज्य"** की स्थापना की थी, जो भगवान राम **"मर्यादा पुरुषोत्तम"** द्वारा परिकल्पित समाज की आदर्श स्थिति है। जिसमें पूर्ण सद्भाव, न्याय, धर्म और समृद्धि शामिल है, जहाँ लोग शांति और खुशी से रहते हैं, जिसे आधुनिक समय में **"अंत्योदय"**(सबसे गरीब लोगों का उत्थान) कहा जाता है।

रुद्र सहित चंडी यागम हिंदू धर्म में एक प्रमुख और शक्तिशाली यागम है जो अपने व्यापक प्रयोजन के लिए प्रतिष्ठित है। इस यागम को करने से, व्यक्ति देवी चंडी और भगवान रुद्र की दिव्य ऊर्जाओं का आह्वान कर सकता है और जीवन की विभिन्न चुनौतियों के लिए एक शक्तिशाली समाधान प्रदान कर सकता है। यह एक प्राचीन अनुष्ठान है जो पर्यावरण की रक्षा और हवा को शुद्ध करने में मदद करता है।

इस यागम को करने से, हर कोई निम्नलिखित कार्य कर सकता है :

- समग्र सफलता और समृद्धि प्राप्त करें
- बाधाओं और दोषों (नकारात्मक ऊर्जाओं) पर विजय प्राप्त करें
- स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को कम करें और गंभीर बीमारियों का इलाज करें
- बुरी नज़र, शाप और प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा करें
- एकता, प्रेम और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा दें
- बीमारियों, वायरस और नकारात्मक शक्तियों के खिलाफ़ सुरक्षा कवच प्राप्त करें

कामाक्षी माता की आदेश पर और **श्री कांची काम कोटि पीठम** के श्री शंकराचार्य स्वामी जी के आशीर्वाद से **चिन्मयी सेवा ट्रस्ट** और **श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट** द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित **"श्री महा नारायण दिव्य रुद्र सहिता सत सहस्र**

विश्व शांति चंडी यागम" अयोध्याधाम (सनातन धर्म की आध्यात्मिक राजधानी) में आयोजित किया जा रहा है। जिसमें उत्तर और दक्षिण के पूर्ण सामंजस्य के साथ पूरे भारत से बहुत ही आध्यात्मिक, भक्तिपूर्ण और सबसे प्रसिद्ध धर्माधिकारियों, पीठाधिपतियों और महापंडितों की उपस्थिति देखने को मिलेगी, यह एक अद्वितीय और महत्वाकांक्षी प्रयास है जिसका उद्देश्य वैश्विक सद्भाव और समृद्धि को बढ़ावा देना है। यह आयोजन विश्व शांति, सांप्रदायिक सद्भाव, पर्यावरण कल्याण, मानव कल्याण, सामाजिक और नैतिक कल्याण, आत्मनिर्भर भारत, समृद्ध भारत और विकसित भारत सहित कल्याण के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित अपनी तरह का पहला आयोजन है।

यह एक पवित्र अग्नि अनुष्ठान है जो देवी चंडी (देवी दुर्गा का एक रूप), भगवान रुद्र (भगवान शिव का एक रूप) और अन्य देवी-देवताओं की दिव्य ऊर्जा का आह्वान करने के लिए किया जाता है, जो सभी प्रकार की बुरी शक्तियों से आशीर्वाद और सुरक्षा प्राप्त करके जीवन की विभिन्न चुनौतियों के लिए एक शक्तिशाली समाधान प्रदान करता है।

हमारे देश और ब्रह्माण्ड की भलाई के लिए, यह संपूर्ण अद्वितीय महायगनम अनुष्ठान **"मंत्र दृष्टा", "पंच कोटि गायत्री जप सत्र यगा कर्ता", "सम दर्शन सुतपस्वी", "निगम अगम भीजना," "अगम ध्यानी," "त्रयी विद्या भूषण",** "ब्रह्मर्षि यानमंदरा वेणु गोपाल शास्त्री गरु", के मार्गदर्शन और देखरेख में अत्यंत भक्ति और देखभाल के साथ होगा, उन्हें श्री आनंद नाथ गुरुवर्युलु के नाम से भी जाना जाता है और उनके समर्पित दल में भारत भर से 1200 से अधिक वैदिक विद्वान शामिल हैं और इस अनुष्ठान के मुख्य आचार्य जो गहन ज्ञान और प्रतिभा के धनी हैं, यह प्रतिष्ठित "संगीत साहित्य वेदप्रवीण", "शुतिवाग्गेय कलानिधि", डॉ. यानामंद्र श्रीनिवास शर्मा गरु, जिन्हें "नीलकंठनंदनाथ" के नाम से भी जाना जाता है। "आगम अभिज्ञ", "धनंजय", श्री शास्त्री गरु के पुत्र, श्री यनमंद्र सुब्रह्मण्य शर्मा गरु हैं जिन्हें "विमला आनंदनाथ" के नाम से भी जाना जाता है, उनके साथ श्री सुरेश शास्त्री गरु हैं, जो भारतीय सनातन धर्म क्षेम के लिए कांचीपुरम के श्री कामाक्षी मंदिर के मुख्य पुजारी हैं।

यह भव्य विश्वशांति महायागम एक शानदार और पवित्र आयोजन है जो

18 नवम्बर 2024 (सोमवार) अंकुरार्पण और
1 जनवरी 2025 (बुधवार) को समापन

को समापन करते हुए 45 दिनों तक लगातार आयोजित किया जाएगा।

इस कलियुग में पहली बार किया जा रहा यह महायागम एक अद्वितीय और असाधारण अनुष्ठान है जिसे "श्री महा नारायण दिव्य रुद्र सहिता शत सहस्र चंडी विश्व शांति महायागम" के नाम से जाना जाता है, जो इतिहास में पहले कभी देखा या सुना नहीं गया।

यह यागम तीन सर्वोच्च दिव्य शक्तियों- परमात्मा (परमात्मा), शिव, परशक्ति और महाविष्णु की एकता को दर्शाता है। इसे उनके दिव्य संगम का प्रतीक बनाकर श्री महा नारायण दिव्य रुद्र संहिता शत सहस्र चंडी विश्व शांति यागम" के रूप में आयोजित किया जाता है। इस यागम के भाग के रूप में, चतुर्वेद पारायणम, हवनम, पंचायतन, गणपति, सुदर्शन, नरसिम्हा चंडी, वनदुर्गा महाविद्या जैसे देवताओं की पूजा और कई अन्य अनुष्ठान (अनुष्ठान), सूर्य नमस्कारम, सहस्र

लिंगार्चनम, नवग्रह मंत्र अनुष्ठानम, सुब्रह्मण्यम मंत्र अनुष्ठानम, श्री राम तारक, अंजनेयमहा मंत्र अनुष्ठानम, श्रीमद रामायण, देवी भागवत पारायणम, और दशा कोटि चंडी नवार्णमूल मंत्र अनुष्ठानम जैसे विभिन्न पवित्र अनुष्ठान किए जाएंगे।

निम्नलिखित यागम किए जाएंगे:

- गणपति यागम
- सुदर्शन यागम
- महालक्ष्मी यागम
- नरसिम्ह यागम
- धन्वंतरि यागम
- मृत्युंजय यागम
- सुब्रह्मण्य यागम
- नवग्रह यागम
- वन दुर्गा यागम
- सूर्य यागम
- दश महाविद्या यागम
- कार्तवीर्यअर्जुन यागम
- पुत्र कामेष्टि यागम
- महासरस्वती यागम
- श्रीमद्रमायन परायणम

इस आयोजन का उद्देश्य निम्नलिखित को बढ़ावा देना है:

आध्यात्मिक नेताओं और विद्वानों का यह समागम निस्संदेह एक शक्तिशाली और उत्थानशील वातावरण का निर्माण करेगा, जो सभी के कल्याण के लिए सकारात्मक ऊर्जा और आशीर्वाद प्रदान करेगा।

अयोध्याधाम, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की जन्मस्थली होने के कारण इस आयोजन को और अधिक महत्व प्रदान करता है। इस पवित्र भूमि की तरंगें निश्चित रूप से इस आयोजन में उपस्थित लोगों के इरादों और प्रार्थनाओं को और अधिक प्रगाढ़ करेंगी।

इस यागम में भाग लेना एक दुर्लभ और शुभ अवसर है। सभी भक्तों को धन, सामग्री या अन्य भेंट के रूप में योगदान करने और नित्यानंददानम (दैनिक भोजन दान) पहल का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। ऐसा करने से वे भगवान श्री राम के आशीर्वाद के पात्र बनेंगे, जो वेदों में पूजनीय हैं।

भागीदारी के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया यहां दबाएं:

संपूर्ण यागम प्रक्रिया में, दैनिक दिनचर्या को दो सत्रों में विभाजित किया जाता है।

प्रातः कालीन सत्र का यज्ञ पुरुष स्वरूप यज्ञ पर आधारित होगा, जिसमें श्री ब्रह्मा, श्री महाविष्णु और श्री महाशिव सहित सभी देवताओं को शामिल किया जाएगा। दैनिक यज्ञ गतिविधियां प्रातः 8:00 बजे से अपराह्न 1:00 बजे तक होंगी।

शाम का सत्र यागम स्त्री स्वरूप यागम होगा जिसमें देवी शक्ति स्वरूपम की सभी गतिविधियों को शामिल किया जाएगा जो शाम 4:00 बजे से रात 9:00 बजे तक होगी।

दिन का समापन रात्रि 9:00 बजे नीरजनम, मंत्र पुष्पम, पूर्णाहुति और तीर्थप्रसादम वितरण के साथ होगा।

जब यागम हो रहा होगा, तो समानांतर रूप से ऋत्विकों द्वारा मूल मंत्र जपम किया जाएगा। इसके अलावा निम्नलिखित क्षेत्रों में प्रतिष्ठित वैदिक विद्वानों द्वारा पारायणम किया जाएगा...

चतुर्वेद पारायणम (वेदों के सभी रूप)	दिव्य प्रबंध परायणम	श्री रामायण पारायण	श्री भागवत पारायण
श्री महाभारत पारायण	श्री सुन्दरकाण्ड पारायण	उपनिषद पारायण	श्री शाक्तेय पारायण
	श्री महाविष्णु सहस्रनाम पारायण	श्री ललिता सहस्र नाम परायण	

सुबह और शाम दोनों सत्रों में योग की प्रक्रिया के दौरान अन्य महत्वपूर्ण पारायण प्रस्तुत किए जाएंगे

अंतिम दिन महापूर्णाहुति होगी। यह शुद्धजल अयोध्या भगवान श्री राम के पास ले जाया जाएगा और इस पवित्र जल से भगवान का अवभृतस्नान होगा। (45 दिनों के महायागम के दौरान उत्पन्न संपूर्ण शक्ति भगवान श्री राम देवता को हस्तांतरित कर दी जाएगी)।

सर्वोच्च सत्ता अनंत प्रकाश है, जो आत्मज्योति (आत्मा का प्रकाश) और महान ऊर्जा के समान है। यह प्रकाश अनगिनत लाखों ब्रह्मांडों में व्याप्त है। "शिव" शब्द "वशि " के अक्षरों को उलटने से बना है। यह अनंत प्रकाश शिव है, इसकी ऊर्जा पराशक्ति है और इसका विस्तार महाविष्णु है। यह निगम और आगम वेदों का सार है जो इन तीन दिव्य संस्थाओं के बीच अविभाज्य संबंध को इंगित करता है।

- दिव्य रुद्र यागम परमपिता शिव के अनंत प्रकाश को समर्पित है।
- शत सहस्र चंडी यागम पराशक्ति के अनंत प्रकाश को समर्पित है।
- महा नारायण यागम उस अनंत प्रकाश को समर्पित है जो असंख्य ब्रह्मांडों में व्याप्त है, जो महाविष्णु हैं।

पंचरत्न गोष्ठी: अंतिम दिन हमारे देश के विद्वानों द्वारा मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम के दिव्य निवास में पंचरत्न गोष्ठी का आयोजन किया गया है।

वाग्गेयकारों के संगीत उपासना: इन 45 दिनों के दौरान हमारे देश के प्रसिद्ध कर्नाटक और हिंदुस्तानी संगीतकारों द्वारा सद्गुरु त्यागराज, श्री रामदासु, श्री तुलसीदास, श्री कबीरदास, श्री दीक्षितार, श्री श्यामा शास्त्री, श्री अन्नमाचार्य, श्री जयदेव, संत सूरदास आदि की रचनाएँ गाई और बजाई जाती हैं।

यागम की संपूर्ण 45 दिवसीय अवधि के दौरान, एक विशेष रूप से निर्मित मंच पर निम्नलिखित कार्यक्रमों सहित सांस्कृतिक **कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे:**

- भजन (भक्ति गीत)
- नाम संकीर्तनम
- देश भर के प्रसिद्ध संगीतकारों द्वारा संगीत कार्यक्रम

यह कार्यक्रम विशेष रूप से इसी मंच पर आयोजित किए जाएंगे, जो संगीत और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति के माध्यम से भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए समर्पित होंगे।

हम सभी से अनुरोध करते हैं कि वे इस असाधारण आयोजन का हिस्सा बनें, जिसमें श्री राम, भगवान शिव और देवी चंडी की तरंगें गूंजती हैं। उनके आशीर्वाद से आने वाली पीढ़ियों के लिए सभी परिवारों में स्वास्थ्य, शांति और समृद्धि आए।

पूरे भारत से भक्तों से अनुरोध है कि वे राम लला के दर्शन के इस दिव्य कार्यक्रम में भाग लें।

स्थान: श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट, कारसेवकपुरम, अयोध्या।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया संपर्क करें:

सत्य मूर्ति - 81426 66666
सी.वी. रामन - 89773 84767

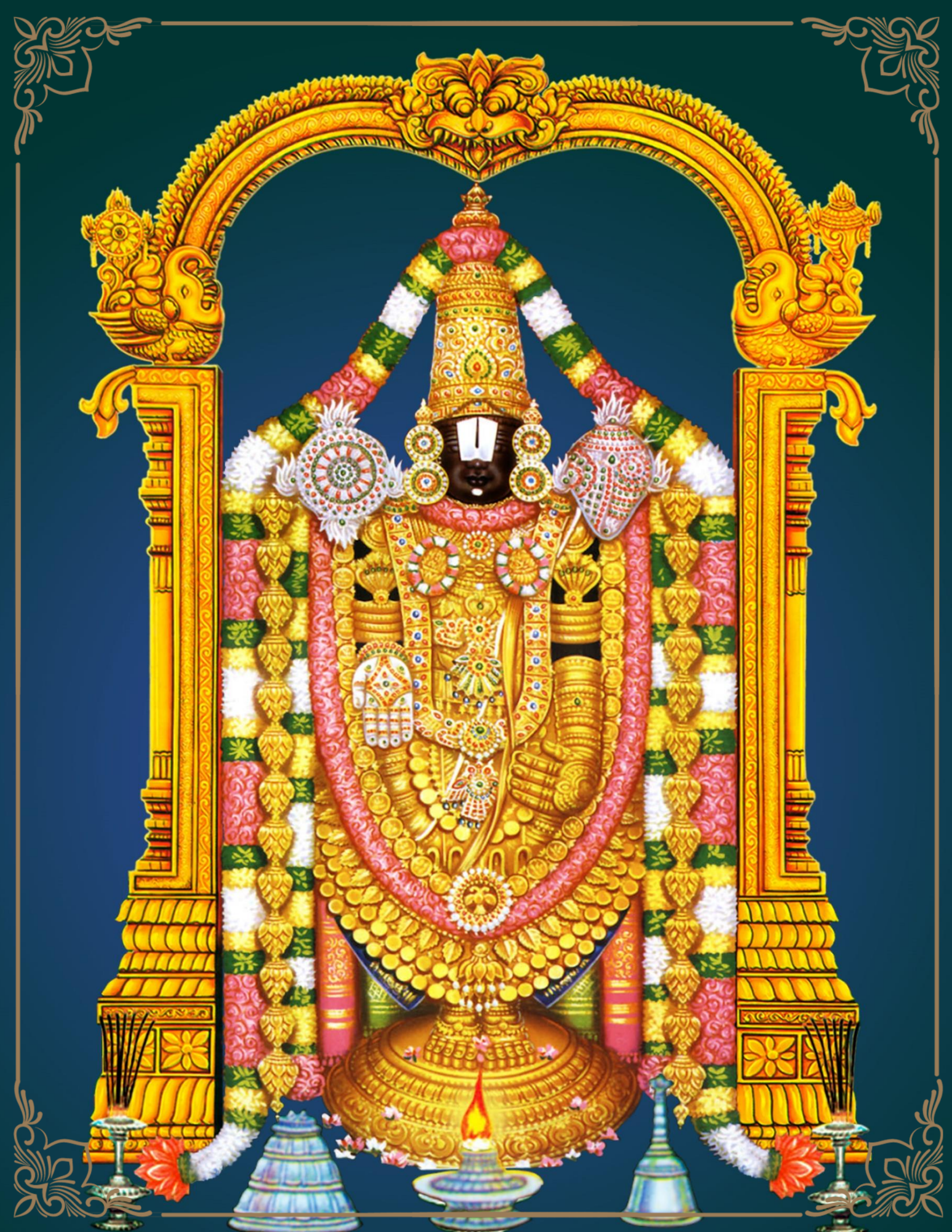

धन्यवाद

श्री महा नारायण दिव्य रुद्र सहित शत सहस्र चंडी विश्व शांति महा यागम

(श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट, श्री कांची कामकोटि पीठम, चिन्मयी सेवा ट्रस्ट द्वारा आयोजित)

श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट कारसेवकपुरम

कॉर्पोरेट पता: #1-8-448, लक्ष्मी बिल्डिंग, 5वीं और 6वीं मंजिल, बेगमपेट, हैदराबाद, तेलंगाना